।। सर्वदेवी–देवता पूजन विधि।।

"पूजा सम्बन्धी कुछ ध्यान देने योग्य बातें"

पूजा करने के लिए घर में अलग स्थान होना चाहिए। कुछ लोग बेडरूम में, ड्रांइगरूम में या सीढ़ियों के नीचे पूजा करते हैं, जो कि गलत है। पूजन स्थान में देवताओं की प्रतिमा, चित्र इत्यादि को अच्छे तरीके से रखना चाहिए। टूटे हुए शीशे की तस्वीर अथवा भग्न प्रतिमा पूजन के लिए वर्जित है। पूजाघर का वातावरण शुद्ध, स्वच्छ, हवादार एवं शोर मुक्त होना चाहिए।

नित्यपूजा सूर्योदय के बाद प्रथम चार घंटों के अंदर करना चाहिए। पूजा के पहले कुछ न खाना ही नियम है, किंतु ऐसा संभव न हो, तो हल्का–सा जलपान कर सकते हैं। किंतु नमक, तेल एवं मिर्च का प्रयोग न करें। पूजन के समय शांति बनाए रखना चाहिए। तांत्रोक्त पूजन रात्रि में ज्यादा फलदायी होती है। किंतु इससे तामसिकता भी बढ़ती है। देवताओं को उनकी रुचि के अनुसार पुष्प अवश्य समर्पण करना चाहिए। पुष्पों से ही देवगण आकर्षित होते हैं। पूजा के समय धूप–दीप अवश्य जलते रहना चाहिए। पुष्पों के अभाव में अक्षत को रोली, सिंदूर अथवा हल्दी से रंग कर भी चढ़ाया जा सकता है।

साधारण रुप से पूजा के लिए निम्नलिखित उपकरणों की आवश्यक्ता पड़ती है– देव प्रतिमा या चित्र एवं यंत्र, पूजा की चौकी, पूजक का आसन, कोश–कोशिका (ताम्र निर्मित मत्सयाकार अर्ध्यपात्र विशेष, जिसमें प्रोक्षणादि के लिए जल रखा जाता है, कोश कहलाता है और उसी आकार का छोटा पात्र जिसके द्वारा कोश का जल लेकर अर्चनादि करते हैं, कोशिका कहलाता है।), पुष्प पात्र, चंदन, सिंदूर रखने के छोटे पात्र, लोटा, शंख, घंटी तथा उनके आधार, धूप, दीप, नैवेद्य, जल इत्यादि के लिए पात्र।

पूजा के उपकरणों को नित्य स्वच्छ करना चाहिए तथा पूजा के अतिरिक्त अन्य किसी काम में नहीं लगाना चाहिए। बासी, मुरझाए, सड़े–गले, कीटों से खाये, कटे–फटे, जमीन पर गिरे, सूंघे या चोरी के पुष्प देवता पर नहीं चढ़ाना चाहिए। पुष्पों को उलटकर नहीं चढ़ाया जाता। देवता के लिए नैवेद्य, जल इत्यादि पात्र में रखते ही उन पर बिल्वपत्र, तुलसीदल या दूर्वा एवं पुष्प रखकर ढक देना चाहिए। सभी दीक्षित भक्त साधकों के लिए इष्ट देवता की पूजा–उपासना एक नित्यकरणीय कृत्य है। पूजा का संक्षिप्त अर्थ है– प्रेमपूर्वक देवता की सेवा करना, उन्हें विविध वस्तु अर्पित करना, उनकी प्रसन्नता के अनुकूल कार्य करना।

पूजा दो प्रकार से की जाती है– मानस तथा बाह्य। पूजक को अपने पूज्य देवता के साथ एकत्व की अनुभूति कराना ही पूजारूप साधन का साध्य है।

नित्य पूजा करने से पहले देवी–देवताओं के चित्र या प्रतिमा को गीले कपड़े से पोछकर साफ करना चाहिए। तब पूजा करनी चाहिए।

पूजा करने से पहले के सामान्य नियम

"देवो भूत्वा देवं यजेत्" अर्थात् देवताओं की पूजा करने से पहले स्वयं देव स्वरूप होना चाहिए। पवित्रीकरण, आचमन, तिलक, न्यास, भूतशुद्धि, दिग्बंधन इत्यादि ऐसे कृत्य हैं, जिन्हें पूजन से पहले अवश्य संपन्न करनी चाहिए। सीधे पूजन नहीं प्रारम्भ किया जाता।

पवित्रीकरण मंत्र :– ॐ अपिवत्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं, स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

आचमन :– इन तीनों मंत्र से एक–एक कर स्वाहा बोलते हुए आचमन करें।

ॐ अमृतोपरस्तरणमसि स्वाहा।। 1।।

ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।। 2।।

ॐ सत्यं यशः श्रीर्मयि, श्रीः श्रयतां स्वाहा।। 3।।

शिखावंदन :– दाहिने हाथ की अंगुलियों को गीला कर तत्व मुद्रा द्वारा शिखा स्थान का स्पर्श करें।

ॐ चिद्रूपिणि महामाये, दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि शिखा मध्ये, तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।।

प्रस्तुतिः– श्री अभिषेक कुमार (महाविद्याओं के सिद्ध साधक, मंत्र, तंत्र, यंत्र विशेषज्ञ, ज्योतिषाचार्य एवं वास्तुशास्त्री तथा शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
(परमपूज्य गुरूदेव श्री निखलेश्वरानंदजी की कुलपरम्परा में दीक्षित परमपूज्य गुरूदेव श्री अरविंद सिंहजी के परमप्रिय शिष्य)
शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0–हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी –8. Mob:- 8804076647, email:- shaktianusandhankendra@gmail.com

।। सर्वदेवी–देवता पूजन विधि।।

चंदन लगाने का मंत्र :– ॐ चन्दनस्य महत्पुण्यं, पवित्रं पाप नाशनम्। आपदां हरते नित्यं, लक्ष्मीस्तिष्ठति सर्वदा।।

सामान्य तिलक धारण करने का मंत्र :– ॐ केश्वानन्त गोविन्द वाराह पुरुषोत्तम्। पुण्यं यशस्यमायुष्यं तिलकं मे प्रसीदतु।।

रक्षासूत्र :– इस मंत्र द्वारा पुरुष अपने दायें हाथ में तथा महिलायें बायें हाथ में मौली बाँधे।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

सामान्यार्घ्य स्थापन → भूमि पर अपने सम्मुख थोड़ी बायीं ओर लाल चंदन अथवा जल द्वारा एक ऊर्ध्वमुख त्रिकोण उसके बाहर एक वृत तथा उसके भी बाहर एक चतुर्भुज मण्डल अंकित कर उस पर निम्नोक्त मंत्र से गंध–पुष्प द्वारा पूजन करें। अगर स्त्री देवी हो तो त्रिकोण अधोमुख बनायें।

पुरुष देव के लिए →

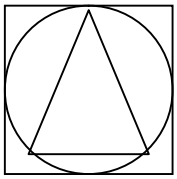

स्त्री देवी के लिए →

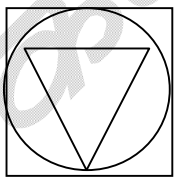

तत्पश्चात् फट् मंत्र से कोश–कोशिका को जल से धोते हुए अंकित मण्डल पर रखें तथा 'नमः' मंत्र से जलापूर्ण करें तथा बिल्वपत्र, दूर्वा, अक्षत, गंध एवं पुष्प द्वारा एक अर्घ्य रचकरर उसे 'ॐ' मंत्र से कोश के अग्र भाग पर स्थापित करें। तदुपरांत अंकुश मुद्रा द्वारा कोश के जल का स्पर्श कर निम्नोक्त मंत्र कहते हुए उसमें सूर्यमण्डल से तीर्थों का आवाहन करें।

ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन सन्निधिं कुरु।।

फिर उस जल में गंध, पुष्प, अक्षत आदि प्रदान करें, तथा **हूं** मंत्र से अवगुण्ठन–मुद्रा प्रदर्शन, **वं** मंत्र से धेनु–मुद्रा द्वारा अमृतीकरण एवं मत्सय–मुद्रा द्वारा आच्छादित कर दस बार **ॐ** मंत्र का जप करें।

द्वारपूजा → 'ॐ द्वारदेवताभ्यो नमः'– मंत्र का उच्चारण करते हुए द्वार पर अर्घ्यजल छिड़ककर निम्नोक्त मंत्र से गंध–पुष्प द्वारा देवताओं की पूजा करें– **ॐ एते गन्धपुष्पे द्वारदेवताभ्यो नमः।**

फिर निम्नोक्त मंत्रों से नैर्ऋत्य (दक्षिण–पश्चिम) दिशा में पूजन करें–

1. ॐ एते गंधपुष्पे ब्रह्मणे नमः। 2. ॐ एते गंधपुष्पे वास्तुपुरुषाय नमः।

भूतापसारण :– अक्षत या सरसों पर सात बार 'फट्' मंत्र पढ़कर उसे बायें हाथ में रखकर दाहिने हाथ से सभी दिशाओं में छिड़कते हुए घण्टावादनपूर्वक निम्नोक्त मंत्र कहें–

ॐ पूर्वे रक्षतु वाराहः, आग्नेय्यां गरुड़ध्वजः। दक्षिणे पद्मनाभस्तु, नैर्ऋत्यां मधुसूदनः।। 1।।

पश्चिमे चैव गोविन्दो, वायव्यां तु जनार्दनः। उत्तरे श्रीपति रक्षेद्, ऐशान्यां हि महेश्वरः।। 2।।

ऊर्ध्वं रक्षतु धाता वो, ह्यधोऽनन्तश्च रक्षतु। अनुक्तमपि यत् स्थानं, रक्षत्वीशो ममाद्रिधृक।। 3।।

ॐ सर्वविध्नानुत्सराय हूं फट् स्वाहा।

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः। ये भूता विध्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।। 4।।

अपक्रामन्तु भूतानि, पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन, यज्ञकर्म च पूजाकर्म समारभे।। 5।।

भूमिशुद्धि :– मुट्ठी में जल लेकर 'ॐ रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा' मंत्र कहते हुए उसे भूमि पर गिरायें।

आसनशुद्धि :– आसन के सम्मुख भूमि पर जल से त्रिकोणमण्डल अंकित कर निम्नोक्त मंत्र से उस पर गंधपुष्प द्वारा पूजा करें– ॐ ह्रीं एते गंधपुष्पे आधारशक्त्यादिभ्यो नमः।

प्रस्तुतिः– श्री अभिषेक कुमार (महाविद्याओं के सिद्ध साधक, मंत्र, तंत्र, यंत्र विशेषज्ञ, ज्योतिषाचार्य एवं वास्तुशास्त्री तथा शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
(परमपूज्य गुरूदेव श्री निखलेश्वरानंदजी की कुलपरम्परा में दीक्षित परमपूज्य गुरूदेव श्री अरविंद सिंहजी के परमप्रिय शिष्य)
शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0–हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी –8. Mob:- 8804076647, email:- shaktianusandhankendra@gmail.com

।। सर्वदेवी–देवता पूजन विधि।।

फिर आसन का स्पर्श कर निम्नोक्त मंत्र का पाठ करें–

ॐ अस्यासनोपवेशनमन्त्रस्य पृथिव्या मेरूपृष्ठऋषिः, सुतलं छन्दः, कुर्मो देवता, आसनोपवेशने विनियोगः।

इसके बाद हाथ जोड़कर पाठ करें–

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां नित्यं पवित्रं कुरू चासनम्।।

अब आसन के ऊपर त्रिकोण मंडल अंकित कर निम्नोक्त मंत्रों से गंध पुष्प द्वारा उस पर पूजन करें –

ॐ योगासनाय नमः। ॐ वीरासनाय नमः। ॐ शरासनाय नमः।

ॐ ह्रीं एते गंधपुष्पे आधारशक्त्ये कमलासनाय नमः।।

गुरु प्रणाम → यथोक्त स्थानों पर हाथ जोड़कर नीचे लिखे हुए मंत्र कहते हुए प्रणाम करें –

बायें कान के ऊपर – ऐं गुरुभ्यो नमः। (नोट :– ऐं की जगह ॐ भी लगाकर गुरु प्रणाम किया जा सकता है।)

उसके कुछ ऊपर – ऐं परमगुरुभ्यो नमः।

उसके भी ऊपर – ऐं परापरगुरुभ्यो नमः।

सबसे ऊपर – ऐं परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः।

दाहिने कान के ऊपर – ॐ श्रीगणेशाय नमः।

भृकुटि के सामने (बीचों बीच) –ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वदेवदेवी स्वरुपाय श्री महाकाली, महालक्ष्मी च महासरस्वती देव्यै नमो नमः।*

नोट– *यहाँ पर जिस देवता या देवी का पूजन करना हो, उसका बीज मंत्र लगाकर उसे प्रणाम करें।

जैसे गणेश के लिए– ॐ गं सर्वदेवदेवी स्वरुपाय श्री गणेशाय नमः।

लक्ष्मी के लिए– ॐ श्रीं सर्वदेवदेवी स्वरुपाय श्री महालक्ष्म्यै नमः।

शिव के लिए– ॐ सर्वदेवदेवी स्वरुपाय श्री शिवाय नमः।

महामृत्युंजय महादेव के लिए – ॐ हौं जूं सः सर्वदेवदेवी स्वरुपाय श्री महामृत्युंजय महादेवाय नमः।

दुर्गा के लिए – ॐ दुं सर्वदेवदेवी स्वरुपाय श्री दुर्गा देव्यै नमः। अथवा ॐ ह्रीं सर्वदेवदेवी स्वरुपाय श्री दुर्गा देव्यै नमः।

काली के लिए– ॐ क्रीं सर्वदेवदेवी स्वरुपाय श्री कालिका देव्यै नमः।

सरस्वती के लिए – ॐ ऐं सर्वदेवदेवी स्वरुपाय श्री सरस्वत्यै नमः। इत्यादि

नोट :– जिन देवी–देवताओं का बीज मंत्र मालूम न हो, वहाँ केवल ॐ लगाकर भी प्रणाम किया जा सकता है।

करशुद्धि :– 'ह्सौं' मंत्र कहते हुए दाहिने हाथ में रक्त चंदन (लाल चंदन या रोली–कुंकुम) और लालपुष्प लेकर 'आं हूं फट् स्वाहा' मंत्र कहते हुए उसे दोनों हथेलियों के बीच मसलें। फिर उसे बायें हाथ में लेकर 'क्लीं' मंत्र से मस्तक के चारों ओर घुमायें तथा 'ऐं' मंत्र से उसका घ्राण लेते हुए 'फट्' मंत्र से नाराच मुद्रा द्वारा उसे ईशान कोण (उत्तर–पूर्व) में फेंक दें।

पुष्पशुद्धि – 'ॐ शताभिषेक हूं फट् स्वाहा' – मंत्र से पुष्पों पर जल के छींटे दें तथा पुष्पों का स्पर्श कर निम्नोक्त मंत्र का पाठ करें– ॐ पुष्पे पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्प सम्भवे। पुष्पचयावकीर्णे च हूं फट् स्वाहा।।

दिव्यविघ्न निवारण :– गुरु मंत्र, गणपति मंत्र, गायत्री मंत्र एवं मेरे द्वारा दिये गये मंत्रों का उच्चारण कर ऊपर की ओर देखते हुए दिव्य (स्वः) लोक के विघ्नों के दूर होने की भावना करें। अथवा जिस देवता का मुख्य पूजन कर रहे हों, उनका मंत्र।

।। सर्वदेवी–देवता पूजन विधि।।

दिग्बंधन : – 'फट्' मंत्र से दाहिने हाथ की संयुक्त तर्जनी और मध्यमा के द्वारा बायीं हथेली पर अपने सम्मुख तीन बार क्रमशः ऊर्ध्वोध्व (नीचे, मध्य में और ऊपर) ताली दें। फिर 'फट्' मंत्र से दाहिने हाथ के अंगुष्ठ और तर्जनी द्वारा पूर्व दिशा से आरम्भ कर ईशान कोण तक तथा नीचे और ऊपर इन दसों दिशाओं में चुटकी बजायें।

भूमिविघ्ननिवारण :–'फट्' मंत्र से भूमि पर बायीं एड़ी द्वारा तीन बार आघात करते हुए भूर्लोक के विघ्नों के दूर होने की भावना करें।

अन्तरिक्षविघ्ननिवारण :– हाथ में जल लेकर 'अस्त्राय फट्' मंत्र से उसे ऊपर की ओर छिड़कते हुए अंतरिक्ष (भुवः) लोक के विघ्नों के दूर होने की भावना करें।

देवताशुद्धि एवं पूजाद्रव्यशुद्धि :– बीजमंत्रसहित फट् मंत्र (ॐ ऐं फट्) का उच्चारण करते हुए देवता एवं पूजाद्रव्यों पर तीन बार प्रोक्षण (ऊर्ध्वमुख अंगुलियों के अग्र भाग द्वारा जल के छींटे प्रदान) करें तथा धेनु मुद्रा दिखायें।

गणपति के लिए – **ॐ गं फट्** लक्ष्मी के लिए – **ॐ श्रीं फट्** काली के लिए – **ॐ क्रीं फट्** बगलामुखी के लिए– **ॐ ह्रीं फट्** सरस्वती के लिए – **ॐ ऐं फट्** इत्यादि।

मंत्रशुद्धि :– मातृकावर्णों द्वारा पुटित (आवृत) कर बीजमंत्र का जप करें। संक्षेप में अष्टवर्गों के प्रथम वर्णों द्वारा पुटित कर जाप किया जा सकता है। जैसे–

अं ऐं अं। कं ऐं कं। चं ऐं चं। टं ऐं टं। तं ऐं तं। पं ऐं पं। यं ऐं यं। शं ऐं शं।

इसी प्रकार– गणेश के लिए – अं गं अं ..... शं गं शं।

लक्ष्मी के लिए– अं श्रीं अं ..... शं श्रीं शं।

काली के लिए– अं क्रीं अं ..... शं क्रीं शं। इत्यादि

वह्निप्राकार चिन्तन :– 'रं' मंत्र से अपने चारों ओर जलधारा देते हुए वह्निप्राकार का चिन्तन करें, अर्थात् ऐसा सोंचे कि मेरे चारों ओर अग्नि की दीवार बनी हुई है।

देहमार्जन – गुरु मंत्र, गणपति मंत्र एवं अपने इष्ट मंत्र का पाठ करते हुए दोनों हाथों से अपने शरीर का मार्जन करें, अर्थात् पहले सिर से पैर तक फिर पैर से सिर तक स्पर्श करते हुए हाथों को फिरायें।

आत्मरक्षा :– हृदय पर हाथ रखकर पाठ करें– ॐ दुर्गे–दुर्गे रक्षिणि स्वाहा। ॐ आं हूं फट् स्वाहा।

प्राणायाम :– अगर समय हो, तो यहाँ पर रूचि अनुसार प्राणायाम करें। प्राणायाम करने से मंत्र एवं यंत्रों में जागृति आती है। फेफड़े मजबूत होते हैं। यहाँ अपने इष्ट मंत्र से प्राणायाम करें।

संक्षिप्त भूतशुद्धि :– यह शरीर पाँच महाभूतों क्षिति (धरती) जल (पानी), पावक (अग्नि), गगन (आकाश), तथा समीर (वायु) द्वारा बना हुआ है, इसकी शुद्धि की जाती है। भूतशुद्धि का विधान विस्तृत है, यहाँ संक्षेप में भूत शुद्धि की जाती है। भूतशुद्धि की दो विधि है– यौगिक तथा मांत्रोक्त। यहाँ मांत्रोक्त विधि का वर्णन है।

ॐ भूतशृंगाटाच्छिरः सुषुम्नापथेन जीवशिवं परमशिव पदे योजयामि स्वाहा।

ॐ यं लिंगशरीरं शोषय शोषय स्वाहा।

ॐ रं संकोचशरीरं दह दह स्वाहा।

ॐ परमशिव सुषुम्नापथेन मूलशृंगाटमुल्लसोल्लस ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल सोऽहं हंसः स्वाहा।

व्यापक न्यास :– गुरुमंत्र, गणपति मंत्र एवं अपने इष्ट मंत्र का उच्चारण करते हुए मस्तक से पादांगुलियों तक तथा पादांगुलियों से मस्तक तक दोनों हाथों को फिरायें एवं अपने शरीर, वाणी तथा मन के शुद्ध होने की भावना करें। यह क्रिया तीन बार करें।

।। सर्वदेवी–देवता पूजन विधि।।

मातृकान्यास :– हाथ जोड़कर पाठ करें।

ॐ अस्य मातृकामन्त्रस्य ब्रह्मऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, देवी मातृका सरस्वती देवता, ह्लो बीजानि, स्वराः शक्त्यः, अव्यक्त कीलकं, सर्वाभीष्ट सिद्धये लिपिन्यासे विनियोगः।

अब यथोक्त मंत्रोच्चारणपूर्वक तत्वमुद्रा से निम्नोक्त अंगों का स्पर्श करें–

मस्तक – ॐ ब्रह्मणे ऋषये नमः।

मुख – ॐ गायत्रीच्छन्दसे नमः।

हृदय – ॐ मातृकासरस्वत्यै नमः।

मूलाधार – ॐ हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः।

पदद्वय – ॐ स्वरेभ्यो ाक्तिभ्यो नमः।

सर्वांग – ॐ अव्यक्तकीलकाय नमः।

करन्यास :– निम्नलिखित मंत्रोच्चारणपूर्वक यथोक्त रीति से दोनों हाथ की अंगुलियों का स्पर्श करें–

अं कं खं गं घं ङ आं अंगुष्ठाभ्यां नमः – मंत्र से दोनों तर्जनीद्वारा दोनों अंगुष्ठ

इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां स्वाहा – मंत्र से दोनों अंगुष्ठ द्वारा दोनों तर्जनी

उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां वषट् – मंत्र से दोनों अंगुष्ठ द्वारा दोनों मध्यमा

एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां हूं – मंत्र से दोनों अंगुष्ठ द्वारा दोनों अनामिका

ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् – मंत्र से दोनों अंगुष्ठ द्वारा दोनों कनिष्ठा का स्पर्श करें। फिर

अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्याम् अस्त्राय फट् – मंत्र से दाहिने हाथ की तर्जनी और मध्यमा को संयुक्त कर उससे बायें हाथ के तल और पृष्ठ का क्रमशः स्पर्श करते हुए करतल पर ताली दें।

अंगन्यास – यथोक्त मंत्रोच्चारणपूर्वक यथोक्त रीति से अंगों का स्पर्श करें–

अं कं खं गं घं ङ आं हृदयाय नमः – मंत्र से दाहिने हाथ की तर्जनी, मध्यमा और अनामिका के अग्रभाग द्वारा वक्ष स्थल

इं चं छं जं झं ञं ईं शिरसे स्वाहा – मंत्र से तर्जनी और मध्यमा के अग्रभाग द्वारा मस्तक

उं टं ठं डं ढं णं ऊं शिखायै वषट् – मंत्र से अंगुष्ठ द्वारा शिखा

एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हूं – मंत्र से दाहिने हाथ की पाँचों अंगुलियों के अग्रभाग द्वारा बायें बाहुमूल और बायें हाथ की पाँचों अंगुलियों के अग्रभाग द्वारा दाहिने का बाहुमूल

ओं पं फं बं भं मं औं नेत्रत्रयाय वौषट् – मंत्र से तर्जनी, मध्यमा और अनामिका के अग्रभाग द्वारा क्रमशः दक्षिण नेत्र, ऊर्ध्व नेत्र (भ्रूमध्य) एवं वाम नेत्र का स्पर्श करें। फिर

अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्याम् अस्त्राय फट्– मंत्र से दाहिने हाथ की तर्जनी और मध्यमा को संयुक्त कर उससे बायें हाथ के तल और पृष्ठ का क्रमशः स्पर्श करते हुए करतल पर ताली दें।

इसके बाद पुनः एक विशेष न्यास करें।

ॐ श्री गुरुभ्यो नमः – यह मंत्र बोलकर मस्तक झुकाकर प्रणाम करें, तथा नीचे लिखे मंत्रों से सूचित स्थानों पर तत्वमुद्रा द्वारा स्पर्श करते हुए वंदना करें–

1. गुं गुरुभ्यो नमः – (दायें कन्धे पर)
2. गं गणपतये नमः – (बायें कन्धे पर)
3. दुं दुर्गायै नमः – (बाईं जांघ पर)
4. क्षं क्षेत्रपालाय नमः – (दाईं जांघ पर)
5. पं परमात्मने नमः – (हृदय पर)
6. सं सरस्वत्यै नमः – (मुख पर)

।। सर्वदेवी–देवता पूजन विधि।।

इसके बाद पूजा के अधिकार की सिद्धि के लिए भैरव की हाथ जोड़कर प्रार्थना करें एवं उनसे पूजन के मध्य उपस्थित रहकर समस्त विघ्नों तथा आसुरी शक्तियों से रक्षा के लिए निवेदन करें–

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम्। भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि।।

भैरव प्रार्थना कर घण्टानाद करें।

अब इसके बाद देवी–देवताओं पर जल छिड़ककर पूजन प्रारंभ करें। यद्यपि विशेष पूजन में पहले दीप जलाकर संकल्प लिया जाता है। कलश स्थापना किया जाता है। स्वस्तिवाचन किया जाता है, किंतु नित्य पूजन में यह जरूरी नहीं। अगर आपकी इच्छा हो तो कर सकते हैं।

पूजन पंचोपचार, दशोपचार, षोडशोपचार एवं चौंसठोपचार तरीके से संपन्न किए जाते हैं। नित्य पूजा पंचोपचार तरीके से संपन्न की जा सकती है। यद्यपि पूजन किसी भी देवता का ध्यान मंत्र पढ़ने के बाद किया जाता है, किंतु नित्य पूजन में यह संभव नहीं, तो केवल पूजन मंत्र पढ़ते हुए पूजन सामग्री लेकर पूजा कर्म संपन्न करें। बाद में गुरु एवं गणपति से प्रारंभ करते हुए सभी देवताओं का ध्यान मंत्र एवं प्रणाम मंत्र या स्तोत्र इत्यादि पढ़ लेने से पूजन पूर्ण होता है। यहाँ मैं गणपति पूजन का प्रतिदिन करने योग्य सामान्य मंत्र लिख रहा हूँ। इसी प्रकार अन्य देवी–देवताओं का पूजन करें।

पंचोपचार पूजन :–

1. ॐ गं गणपतये नमः गंधं/ चन्दनं/ सिन्दूरं समर्पयामि्।
2. ॐ गं गणपतये नमः अक्षतान् समर्पयामि्।
3. ॐ गं गणपतये नमः पुष्पं/ पुष्पमाल्यां समर्पयामि्।
4. ॐ गं गणपतये नमः दुर्वां/ बिल्वपत्रं समर्पयामि्।
5. ॐ गं गणपतये नमः धुपमाघ्रापयामि्।
6. ॐ गं गणपतये नमः दीपं दर्शयामि्।
7. ॐ गं गणपतये नमः नैवेद्यं निवेदयामि्।
8. ॐ गं गणपतये नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि्।
9. ॐ गं गणपतये नमः ऋतुफलं समर्पयामि्।✓
10. ॐ गं गणपतये नमः पुनराचमनीय जलं समर्पयामि।✓
11. ॐ गं गणपतये नमः ताम्बूलं समर्पयामि्।✓
12. ॐ गं गणपतये नमः पुनराचमनीय जलं समर्पयामि।✓
13. ॐ गं गणपतये नमः द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि।✓
14. ॐ गं गणपतये नमः कर्पूर आर्रातिक्यं समर्पयामि।✓ इसी प्रकार आप अन्य देवी–देवताओं का पूजन कर सकते हैं।

जैसे– दुर्गा जी के लिए – ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः/ ॐ श्री दुर्गा देव्यै नमः/ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे गंधं समर्पयामि्।

(नोट :– जिन पूजन मंत्रों में टिक (✓) का निशान लगा हुआ है, वह प्रत्येक दिन आवश्यक नहीं है। आपकी इच्छा पर है। जो लोग विशेष मंत्रों द्वारा विशेष पूजन करना चाहें, वे अन्य पुस्तकों से सहारा ले सकते हैं।)

शिवलिंग पूजन – किसी भी पूजागृह में शिवलिंग की उपस्थिति अनिवार्य है। आप यूँ भी सामान्य पूजन पद्धति द्वारा शिवलिंग पूजन कर सकते हैं। किंतु इस विधि द्वारा नित्य पूजन करना उचित रहता है। मैं स्वयं इसी विधि द्वारा शिवलिंग पूजन करता हूँ। यह श्री रामकृष्ण परमहंस द्वारा प्रतिपादित तांत्रोक्त पूजन पद्धति है।

।। सर्वदेवी–देवता पूजन विधि।।

गन्धादि अर्चना :– "**ॐ एतेभ्यो गन्धादिभ्यो नमः**" मंत्रोच्चारणपूर्वक उसे पुष्पपात्र से स्पर्श कराते हुए ताम्रकुण्ड में चढ़ायें या जिस प्लेट अथवा थाली में शिवलिंग रखा हुआ है।

फिर इसके बाद इन मंत्रों से ताम्रकुण्ड में गंध–पुष्प चढ़ायें।

ॐ एते गन्ध–पुष्पे एतदधिपतये देवाय विष्णवे नमः।

ॐ एते गन्ध–पुष्पे एतत्सम्प्रदानेभ्यः पूजनीयदेवेभ्यो नमः।

इसके बाद सूर्य को अर्ध्य दें (उसी शिवलिंग पर) रात्रि हो, तो चंद्रमा को अर्ध्य दें।

सूर्यार्ध्यदान :– कोशिका में जल, लालपुष्प, लाल चंदन, दूर्वा तथा अक्षतादि लेकर दोनों हाथों से कोशिका को मस्तक तक उठाते हुए निम्नोक्त मंत्र का पाठ करें। (ध्यान रहे यहाँ लाल फूल में लाल उड़हुल का पुष्प नहीं चढ़ायें। क्योंकि शिवलिंग पर उड़हूल का फूल नहीं चढ़ाया जाता है। ऐसा लोकाचार है।)

ॐ नमो विवस्ते ब्रह्मण् भास्वते विष्णुतेजसे। जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने।।

फिर **"एषोऽर्ध्यः ॐ श्री सूर्याय नमः"** मंत्र से सम्मुखस्थित यंत्र (शिवलिंग) पर अर्ध्यदान करें एवं दिए गए मंत्र कहते हुए प्रणाम करें।

ॐ जवाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। ध्वानतारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

चंद्र अर्ध्यदान :– कोशिका में जल, श्वेतपुष्प, श्वेत चंदन, अक्षतादि लेकर दोनों हाथों से कोशिका को मस्तक तक उठाते हुए निम्नोक्त मंत्र का पाठ करें।

ॐ समुद्र मंथनोज्जातः शिवभालौ प्रभाकर। अनुकम्पय मां देव गृहाणार्घं निशाकर।।

फिर "**एषोऽर्ध्यः ॐ श्री चंद्राय नमः**" मंत्र से सम्मुखस्थित यंत्र (शिवलिंग) पर अर्ध्यदान करें एवं दिए गए मंत्र कहते हुए प्रणाम करें।

ॐ दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम्। नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुट भूषणम्।।

बाणेश्वर शिव पूजा :– यदि बाणेश्वर शिव (नर्मदेश्वर) पर पूजा करनी हो, तो पहले उनकी निम्नोक्त रूप से पूजा करें।

कूर्म मुद्रा में श्वेत पुष्प लेकर निम्नोक्त मंत्र से ध्यान करें–

ॐ ऐं प्रमतं शक्तिसंयुक्तं बाणाख्यं च महाप्रभम्। कामबाणान्वितं देवं संसारदहनक्षमम्।।

शृंगारादिसोल्लासं बाणाख्यं परमेश्वरम्। एवं ध्यात्वा बाणलिंगं यजेतं परमं शिवम्।।

फिर घण्टावादन करते हुए निम्नोक्त मंत्र से स्नान करायें।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

फिर निम्नोक्त मंत्रों से पूजा करें–

ऐं एषः गन्धः बाणेश्वर शिवाय नमः।

ऐं एषः अक्षतान् बाणेश्वर शिवाय नमः।

ऐं इदं सचन्दनपुष्पं बाणेश्वर शिवाय नमः।

ऐं एषः धूपः बाणेश्वर शिवाय नमः।

ऐं एषः दीपः बाणेश्वर शिवाय नमः।

ऐं इदं सोपकरणं नैवेद्यं बाणेश्वर शिवाय नमः।

ऐं एषः आचमनीय जलं बाणेश्वर शिवाय नमः।

फिर निम्नोक्त मंत्र से गौरी–पीठ की पुजा करें।

ॐ ह्रीं एते गन्धपुष्पे गौर्ये नमः।

निम्नोक्त मंत्र से प्रणाम करें।

ॐ बाणेश्वराय नरकार्णवतारणाय ज्ञानप्रदाय करूणामय सागराय।
कपूर्र कुन्द धवलेन्दु जटाधराय दारिद्रयदुःखदहनाय नमः शिवाय।।

शिव पूजा :– कूर्म मुद्रा में श्वेत पुष्प लेकर निम्नोक्त मंत्र से ध्यान करें –

ॐ ध्यायेनित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारूचन्द्रावतंसं, रत्नाकल्पोज्जवलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैव्याघ्रकृतिं वसानं, विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

अब निम्नोक्त मंत्र से घण्टा वादन करते हुए स्नान करायें।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

फिर निम्नोक्त मंत्रों से पूजा करें–

ॐ नमः शिवाय एष गन्धः शिवाय नमः।

ॐ नमः शिवाय एष अक्षतान् शिवाय नमः।

ॐ नमः शिवाय इदं सचन्दनपुष्पं शिवाय नमः।

ॐ नमः शिवाय इदं सचन्दनबिल्वपत्रं शिवाय नमः।

ॐ नमः शिवाय एष धूपः शिवाय नमः।

ॐ नमः शिवाय एष दीपः शिवाय नमः।

ॐ नमः शिवाय इदं सोपकरणं नैवेद्यं शिवाय नमः।

ॐ नमः शिवाय एष आचमनीयं जलं शिवाय नमः।

फिर निम्नोक्त मंत्रों से गंधपुष्प द्वारा अष्टमूर्त्तियों एवं गौरी की पूजा करें।

ॐ एते गंधपुष्पे अष्टमूर्त्तिभ्यो नमः। ॐ एते गंधपुष्पे गौर्ये नमः।

फिर इस मंत्र द्वारा प्रणाम करें:– **ॐ नमः शिवाय शान्ताय कारणत्रयहेतवे। निवेदयामि चात्मानं गतिस्त्वं परमेश्वर।।**

(नोट :– शिवलिंग के पूजन में लाल उड़हूल के फुल एवं रोली का प्रयोग नहीं किया जाता है। रोली की जगह श्वेत चंदन अथवा गोपी चंदन का उपयोग करें। अगर आपके पास नर्मदेश्वर शिवलिंग है, तो ही बाणेश्वर शिव की पूजा करें। अगर नर्मदेश्वर शिवलिंग नहीं है, तो केवल शिव पूजन करें। जिनके पास नर्मदेश्वर शिवलिंग है, तो उनके लिए यह पूजन आवश्यक है। बाणेश्वर शिव की पूजा करने के बाद, शिव पूजन आपकी इच्छा पर निर्भर है। यहाँ मैंने तांत्रोक्त पद्धति से लिखा। आप चाहें तो पूजन के सामान्य मंत्रों से भी पूजन ध्यान के मंत्र पढ़ने के पश्चात कर सकते हैं। जैसे – ॐ गंधं समर्पयामि श्री शिवाय नमः अथवा ॐ नमः शिवाय बिल्वपत्रम् समर्पयामि।)

अब इस प्रकार से पूजन करने के बाद संक्षेप में माला का पूजन करें। 'ॐ ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः' मंत्र से या माला संस्कार में दिए हुए मंत्रों से।

अब इसके बाद सर्वप्रथम गुरू स्तोत्र (नारायण स्मरण), गुरुदेव जी के 108 नाममाला, गणेश स्तोत्र एवं जिस देवता का मंत्र दिया गया है, उसका नाम या स्तोत्र इत्यादि पढ़कर सभी मंत्रों का जप करें। जप के पश्चात् माला को सिर से लगाकर जप निवेदन करें। इसके बाद इष्ट देवता का कवच अवश्य पाठ करें। कवच पाठ करने से शरीर की, मन की, आत्मा की तथा मंत्रों की रक्षा होती है। कवच पाठ के बाद हवन कर्म संपन्न करें। संक्षिप्त हवन विधि आगे दी गई है। अगर प्रतिदिन हवन में समर्थ हों तो करें, अन्यथा सप्ताह में एक दिन या महीने में एक या दो बार। इसके बाद जिस देवता का मंत्र जपा गया हो

।। सर्वदेवी–देवता पूजन विधि।।

या प्रमुख पूजन किया गया हो, उनकी आरती संपन्न करें। आरती के बाद प्रदक्षिणा, मंत्रपुष्पांजलि एवं नमस्कार संपन्न करें। यह मंत्र आपको संबंधित देवताओं के विशेष पूजन पुस्तक में मिल जायेंगे। यहाँ मैं नीचे संक्षेप में उल्लेख कर रहा हूँ। फिर इसके बाद क्षमा प्रार्थना करें। पुरुष देव के लिए अलग मंत्र होता है, स्त्री देवी के लिए अलग। इसके बाद पूजन कर्म हाथ में जल लेकर देवताओं को समर्पण करें। जयकारा लगाकर घर के लोगों में, मित्रों में प्रसाद एवं पूजा का बचा हुआ जल वितरित करें।

प्रदक्षिणा मंत्र :–

ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे–पदे।
ॐ श्री इष्ट देवाय/देव्यै नमः। प्रदक्षिणां पदं समर्पयामि्।

मंत्रपुष्पाञ्जलि :–

ॐ श्रद्धया सिक्त्या भक्त्या हार्दप्रेमणा समर्पितः। मंत्रपुष्पाञ्जलिश्चायं कृपया प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ श्री इष्ट देवाय/देव्यै नमः। मंत्रपुष्पाञ्जलिम् समर्पयामि्।

नमस्कार–

(1) पुरुष देव के लिए–

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्रमूर्तये सहस्त्रपादाक्षि शिरोरूबाहवे।
सहस्त्रनाम्ने पुरुषायशाश्वते, सहस्त्रकोटि युगधारिणे नमः।।
ॐ श्री इष्ट देवाय नमः नमस्करान समर्पयामि।

(2) स्त्री देवी के लिए–

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।
ॐ श्री इष्ट देव्यै नमः नमस्करान समर्पयामि।
(नोट :– जिस देवी/देवता को प्रणाम कर रहे हैं, उनका प्रणाम मंत्र/श्लोक भी यहाँ पर हो सके तो पढ़ लें।)

अब क्षमा प्रार्थना करें।

पुरूष देव के लिए

ॐ आवाहनं न जानामि, नैव जानामि विसर्जनम्। पूजनम् हि न जानामि, क्षमस्व परमेश्वर।।
मंत्रहीनं क्रियाहीनं, भक्तिहीनं सुरेश्वर। यत्पूजितं मया देव! परिपूर्णं तदस्तु मे।।
यदक्षरपदभ्रष्टं, मात्राहीनं च यद् भवेत्। तत्सर्वं क्षम्यतां देव! प्रसीद परमेश्वर।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या, तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति, सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।
प्रमादात्कुर्वतां कर्म, प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः, सम्पूर्णं स्यादितिश्रुतिः।।

स्त्री देवी के लिए

ॐ अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया। दासोऽयमिति मत्वा मे क्षमस्व परमेश्वरि।।
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि। यत्पूजितं मया देवि, परिपूर्णं तदस्तु मे।।
अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत्। यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः।।
सपराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके। इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरू।।
अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रन्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्। तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरी।
कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे। गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि।।
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि।।

"शक्ति अनुसंधान केन्द्र"

।। सर्वदेवी–देवता पूजन विधि।।

इसके बाद हाथ में जल लेकर यह मंत्र कहते हुए जल छोडें।

ॐ अनेन यथाशक्त्यार्चेन श्री इष्ट देवः/ देवीः प्रीयताम् न मम्।

इसके बाद जयकारा लगायें।

प्रदक्षिणा विचार– गणपति की तीन, शिव की आधी, देवियों के लिए एक, विष्णु की चार, पीपल इत्यादि वृक्ष एवं अग्नि की सात प्रदक्षिणा होती है। गुरु, हनुमान इत्यादि के पाँच प्रदक्षिणा स्वीकार्य है। भगवान सूर्य के लिए भी सात प्रदक्षिणा संपन्न की जाती है।

विशेष तथ्य :– आमतौर पर आप और हम सभी किसी विशेष पूजन के प्रारम्भ में संकल्प करते हैं। लेकिन परमपूज्य गुरुदेव श्री अरविंद सिंह जी संकल्प नहीं करते हैं, बल्कि पूजन के अंत में भिक्षांदेहि मनोकामना पूर्ति प्रयोग करते हैं। जिसमें वे माता अन्नपूर्णा की स्तुति करते हैं। आप अपने विचार से उचित निर्णय ले सकते हैं।

।। अथ श्री भिक्षांदेहि मनोकामना पूर्ति प्रयोगम्।।

भिक्षांदेहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी। नानारत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी।।
मुक्ताहारविलम्बमानविलसद्वक्षोजकुम्भान्तरी। काश्मीरागरुवासितांगरुचिरे काशीपुराधीश्वरी।।

।। इति संपूर्ण पूजन विधानम्।।

–: दीक्षा संस्कार :–

दीक्षया तत्पदम् आप्नुयात : दीक्षा से ही ईश्वर तक पहुँचा जा सकता है।

–: भौतिक दीक्षायें :–

1. सर्वबाधा निवारण दीक्षा
2. ऋण मुक्ति दीक्षा
3. दुर्घटना नाशक दीक्षा
4. मनोकामना सिद्धि दीक्षा
5. शीघ्र विवाह दीक्षा
6. पुत्र/संतान प्राप्ति दीक्षा
7. मुकदमों में सफलता प्राप्ति दीक्षा
8. ग्रहबाधा दोष निवारण दीक्षा
9. गर्भस्थ शिशु चैतन्य दीक्षा
10. रोग मुक्ति दीक्षा
11. भ्रम निवारण दीक्षा
12. विद्या प्राप्ति दीक्षा
13. अकाल मृत्यु निवारण दीक्षा
14. तीव्र भाग्योदय दीक्षा
15. सौन्दर्य प्राप्ति दीक्षा
16. यश प्राप्ति दीक्षा
17. गृह क्लेश निवारण दीक्षा
18. दाम्पत्य जीवन साफल्य दीक्षा
19. शत्रु बाधा निवारण दीक्षा
20. मंगली दोष निवारण दीक्षा
21. व्यापार वृद्धि दीक्षा

–: आध्यात्मिक दीक्षायें :–

1. ज्ञान प्राप्ति दीक्षा
2. तंत्र बाधा निवारण दीक्षा
3. ज्योतिषज्ञान प्राप्ति दीक्षा
4. पितृदोष निवारण दीक्षा
5. योग सिद्धि दीक्षा
6. इष्ट दर्शन दीक्षा
7. महाविद्या सिद्धि दीक्षा
8. महाकाली दीक्षा
9. गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा
10. स्वतः भाग्य लेखन दीक्षा
11. कालज्ञान दीक्षा
12. साधना साफल्य दीक्षा
13. जगदम्बा सिद्धि दीक्षा
14. ब्रह्मत्व प्राप्ति दीक्षा
15. महामृत्युंजय दीक्षा
16. मंत्र/तंत्र/यंत्र सिद्धि दीक्षा
17. वाणी सिद्धि दीक्षा
18. प्रेत बाधा निवारण दीक्षा
19. सम्मोहन प्राप्ति दीक्षा
20. आत्म उन्नति दीक्षा
21. कालसर्प योग निवारण दीक्षा

नोट :– उपरोक्त सभी दीक्षायें मूल गुरु दीक्षा प्राप्त करने के बाद ही क्रियाशील होंगी। बिना गुरु दीक्षा संपन्न करवाये आध्यात्मिक जगत में प्रवेश संभव ही नहीं है।

प्रस्तुतिः– श्री अभिषेक कुमार (महाविद्याओं के सिद्ध साधक, मंत्र, तंत्र, यंत्र विशेषज्ञ, ज्योतिषाचार्य एवं वास्तुशास्त्री तथा शक्ति सिद्धांत के व्याख्याता)
(परमपूज्य गुरूदेव श्री निखलेश्वरानंदजी की कुलपरम्परा में दीक्षित परमपूज्य गुरूदेव श्री अरविंद सिंहजी के परमप्रिय शिष्य)
शक्ति अनुसंधान केंद्र, मो0–हजारी, नून का चौराहा, पटना सिटी –8. Mob:- 8804076647, email:- shaktianusandhankendra@gmail.com